

शिशुओ और बच्चो मे एच0आई0वी0 संक्रमण

प्रतिरक्षा प्रणाली रोग (एड्स) तेजी से फैलने वाली महामारी है. मानव प्रतिरक्षा वायरस (एच0आई0वी0) वह वायरस जो कि इस संक्रमण के फैलने का कारण है जो कि तेजी से युवा वर्ग को अपना शिकार बना रहा है. 95 प्रतिशत से अधिक संक्रमित लोग विकासशील देशो मे रहते है, और 95 प्रतिशत मृत्यु भी यहीं हुई है.

एच0आई0वी0 संक्रमित बच्चो मे से अधिकतर गर्भ के समय, जन्म के समय या स्तनपान द्वारा अपनी मां से संक्रमित होते है. यद्यपि संक्रमण मे गर्भ मे शिशु झिल्ली की भूमिका पर शोध हो रहा है, किंतु विशेषज्ञो का मत है कि यदि माता का रक्त शिशु के रक्त संचार मे मिल गया तो शिशु संक्रमित हो जाता है. कुछ कारण जिनसे संक्रमण का खतरा बढ जाता है: शिशु की झिल्ली मे संक्रमण, जन्म के समय झिल्ली के फैलने मे अधिक अन्तराल का होना. कुछ बच्चे और वयस्क संक्रमित रक्त चढाने से और संक्रमित व्यक्ति द्वारा सेक्स शोषण के कारण भी संक्रमित हो सकते है.

शोध से पता चला है कि शिशु को दूध पिलाने से माता से शिशु को वायरस के संक्रमण की सम्भावना 10-15 प्रतिशत अधिक हो जाती है, इसलिये यह आवश्यक है कि माताओ को स्तनपान के हानि और लाभ समझाये जाये. उन देशो मे जहां स्तनपान के अन्य विकल्प उपलब्ध है, वहां इन विकल्पो को बढावा देना चाहिये.

एच0 आई0वी0 संक्रमण बच्चो मे दो प्रकार से विकसित होता है; 20 प्रतिशत संक्रमित बच्चे अपने जीवन के पहले वर्ष मे ही किसी बड़े रोग से ग्रस्त हो जाते है और चार वर्ष की आयु तक उनकी मृत्यु हो जाती है, जबकी अन्य 80 प्रतिशत मे यह रोग धीरे धीरे विकसित होता है. अधिकतर बच्चो मे शारीरिक विकास बहुत धीरे होता है, मानसिक और शारीरिक विकास के महत्वपूर्ण लक्ष्य जैसे बच्चो का चलना, बोलना और स्कूल मे सफलता आदि अधिक समय मे होता है. बड़ो के विपरीत बच्चे अवसरवादी संक्रमण विशेषत: फंगस संक्रमण जैसे कैंडीडा का सरलता से शिकार हो जाते है, किंतु मृत्यु का सबसे बड़ा कारण न्यूमोसिस्टिटिस कार्नी न्यूमोनिया होता है. एच0आई0वी0 संक्रमित बच्चे बचपन से घातक लक्षणो का शिकार हो जाते है जैसे दौरे, ज्वर, न्यूमोनिया, डायरिया और जलाभाव.

शिशुओ मे एच0आई0वी संक्रमण का पता लगा पाना बहुत ही कठिन होता है क्योकि संक्रमित बच्चे अपने जीवन के आरम्भिक कुछ माह तक कोई लक्षण नही दिखाते है और सामान्य दिखते है. साथ ही नवजात शिशुओ मे माता के रक्त संचार से एंटीबॉडी पहुंच जाते है और वह शिशु को लगभग 18 माह तक एच0आई0वी0 के विरुद्ध सुरक्षित रखते है. इस कारण से नवजात शिशुओ मे एच0आई0वी0 की जांच व्यर्थ हो जाती है क्योकि वह एंटीबॉडी शिशु के नही किंतु उसकी माता के होते है.

एच0आई0वी0 के सम्पर्क मे आने वाले हर शिशु की एच0आई0वी0 वायरस के लिये जांच, जन्म के समय, चार से सात सप्ताह की आयु पर, और फिर आठ से 16 सप्ताह की आयु पर होनी चाहिये, जिससे एच0आई0वी0 की

सम्भावना को पूर्ण रूप से जांचा जा सके. यदि किसी जांच में एचआईवी पाया जाता है तो पुनः जांच कर उस परिणाम की पुष्टि करनी चाहिये. पिछले कुछ समय से एचआईवी संक्रमण की जांच के लिये पॉलीमरेस श्रृंखला प्रक्रिया (पॉलीमरेस चेन रिएक्शन) का उपयोग होने लगा है, क्योंकि यह जांच रक्त में उपस्थित वायरस के थोड़े से अंश को भी ढूँढ लेती है, इसलिये इस जांच को विश्वसनीय माना जाता है. एक और तकनीक जिसका प्रयोग किया जा सकता है, उसमें शिशु के रक्त को परखनली में विकसित किया जाता है और उसकी जांच एचआईवी के लिये की जाती है. इन तकनीकों के उपयोग से 90 प्रतिशत एचआईवी संक्रमित शिशुओं को 2 माह की आयु तक पहचान की जा सकती है और 3 माह तक 95 प्रतिशत शिशुओं की पहचान की जा सकती है.

जहां तक सम्भव हो माता के एचआईवी संक्रमण की पहचान गर्भ से पहले या गर्भ के दौरान की जानी चाहिये, क्योंकि इससे माता के लिये उपचार शीघ्र ही आरम्भ किया जा सकता है और ऐसे उपाय लिये जा सकते हैं जिससे गर्भ में संक्रमण शिशु को ना हो. कुछ दवायें माता से शिशु को संक्रमण रोकने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती हैं जैसे एंटीबिोटिक का नियमित उपयोग, जो कि गर्भ के दूसरे और तीसरे तिमाही में किया जाता है और जन्म तक जारी रहता है: किंतु यह उपाय बहुत ही महंगा है और सभी लोगों के लिये उपलब्ध नहीं है. नये शोध से पता चला है कि नेवीरेपीन नामक दवा के कम समय तक प्रयोग करने से जीवन के आरम्भिक 18 सप्ताह में एचआईवी संक्रमण की सम्भावना 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है. यह शोध बहुत ही आवश्यक है क्योंकि यह सस्ता उपाय विकासशील देशों में एंटीबिोटिक का विकल्प बन सकता है. साथ ही कुछ मामलों में एंटीबिोटिक के प्रयोग के साथ यदि आप्रेशन से शिशु का जन्म हो तो माता से शिशु को संक्रमण की सम्भावना कम हो जाती है.

कुछ दवाओं के उदाहरण जिनके प्रयोग से शिशुओं में एचआईवी संक्रमण का उपचार किया जा सकता है:

- 1-Nucleoside Reverse Transcriptase Inhibitors जैसे: लैमीवुडीन और ज़िडोवुडीन.
- 2-Nonnucleoside Reverse Transcriptase Inhibitors जैसे: डेलाविरिडीन और नेवीरेपीन.
- 3-Protease Inhibitors जैसे: अम्प्रेनेवीर और टिप्रनेवीर.
- 4-Fusion Inhibitors जैसे: एंफुवर्टाडिड.